Demand to include Indian Cultural Heritage in New Education Policy

डा. सोनल मानसिंह (नाम निर्देशित): उपसभापति महोदय, मेरा विषय है 'नई शिक्षा नीति में सांस्कृतिक धरोहर की झलक और उसका समावेश'

मुझे बहुत आश्चर्य होता है कि भारत वर्ष एक ऐसा देश है, जहां हज़ारों वर्षों की संस्कृतियां, तरह-तरह की संस्कृतियां आज भी गंगा के रूप में बह रही हैं। कहा जाता है कि 5 हज़ार वर्षों से पुरानी, जिसमें हर तरह की शिक्षाएं समावेश थीं, चाहे वे अस्त्र-शस्त्र हों, weaponry हों, horse riding हो, 64 कलाएं...

श्री उपसभापति: मैडम, इसको पढ़ना है।

डा. सोनल मानसिंह: ठीक है, मैं पढ़ देती हूं।

श्री उपसभापति: आपको पढ़ते हुए बोलना है।

डा. सोनल मानसिंह: जी।

माननीय उपसभापति महोदय, भारतीय संस्कृति की महत्ता सदियों से पहचानी गई है। मुगल एवं अंग्रेजों ने अपनी-अपनी तरह से भारतीय संस्कृति को क्षीण करने के प्रयत्न लगातार किये हैं। समयांतर में शिक्षा के माध्यम से इस विषय में भारी उदासीनता या नकारात्मकता का दृष्टिकोण देखा गया है, जिसका सांस्कृतिक धरोहर व सामाजिक मूल्यों पर गहरा असर हुआ है।

वर्तमान सरकार ने भारत में लगभग 32 सालों के बाद (प्रथम 1968 - अंतिम 1986) नई शिक्षा नीति लागू करने पर विचार किया है। आश्चर्यजनक बात है कि शिक्षा मंत्रालय ने नई शिक्षा नीति बनाने के लिए जिस समिति का गठन किया, जिसमें कला - संस्कृति क्षेत्र से किसी भी व्यक्ति का समावेश नहीं किया है. , जबकि ऐसे विषयों का होना अत्यंत आवश्यक है।

अत: आपके माध्यम से शिक्षा मंत्रालय से मेरी खास विनती और सुझाव है कि नई शिक्षा नीति में भारत की सदियों पुरानी सांस्कृतिक विरासत का ज्ञान शिक्षा प्रणाली को मिले और आने वाली पीढ़ियों को इससे लाभ हो, धन्यवाद।

OBSERVATIONS BY THE CHAIR

श्री उपसभापति: माननीय सदस्यगण, मैं आपके सामने 1-2 ऑब्ज़र्वेशन रखना चाहूंगा। सुबह पेपर ले किया जाता है, माननीय मंत्रियों से अपेक्षा की जाती है कि कम से कम वे समय पर उपस्थित रहें। चेयरमैन साहब, इस बात को बराबर कहते रहे हैं। मुझे उम्मीद है कि आज भी जो एकाध अनुपस्थिति थी, वे या तो चेयरमैन साहब से पूर्व अनुमति लें या अग्रिम सूचना दे दें।

दूसरी बात जिसका मैं उल्लेख करना चाहूंगा, पुन: संथाली भाषा के बारे में है। संथाली जीवन संस्कृति, उसका महत्व और जिस तरह से आज पहली बार संथाली भाषा में यहां हमारी एक